केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल में राष्ट्रपिता महात्मा गाधीं की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में व्याख्यान कार्यक्रम तथा वन महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन।

आज संस्थान में राष्ट्रपिता महात्मा गाधीं की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में व्याख्यान कार्यक्रम तथा वन महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम संस्थान के निदेशक तथा कार्यक्रम के अध्यक्ष डा. प्रबोधचन्द्र शर्मा ने मुख्य अतिथि श्री राजीव रंजन, मुख्य जन सम्पर्क अधिकारी, सर्तकता विभाग, हरियाणा सरकार का स्वागत किया तथा बताया की आज हम राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की 150वीं जयंती मनाने के क्रम के एकत्रित हुए है यह कार्यक्रम कोविड–19 की नियमावली के अतंर्गत आयोजित किया जा रहा है हमनें बचपन में महात्मा गांधी जी के जीवन दर्शन के बारे में पढा है और उससे हम सब बहुत प्रभावित हुए है। हम उनके बताए मार्ग पर चलते है। महात्मा गांधी जी के जीवन दर्शन में बहुत अच्छी–अच्छी बातें है जैसे की जमीनदारी प्रथा नही होनी चाहिए प्रत्येक किसान के पास अपनी अपनी जमीन होनी चाहिए आज कृषि के क्षेत्र में बहुत बदलाव हो चुका है बहुत सारे कृषि विश्वविद्यालय व कोलिज खुल गए है जो किसानों को खेती करने के नए नए तरीके बता रहे है। अब हमें कृषि को आज का चुनौतियों का महात्मा गांधी के कृषि दर्शन के साथ मिलकर मुकाबला करना चाहिए।

मुख्य अतिथि श्री राजीव रंजन जी ने अपने सम्बोधन में कहा की महात्मा गांधी जीने नमक कानुन को चुनौती देने के लिए दाडीं यात्रा की बहुत सारे लोगों जैसे की सुभाष चन्द्र बोस, प्रेम चन्द्र इत्यादि ने नौकरी छोडी। जब गांधी जी दक्षिण अफ्रिका गए वहां उन्होने काले गरीब असहाय वचिंत लोगों पर अत्याचार होते देखें तब उन्होने उनके लिए संघर्ष किया। वकालत न्याय की गारंटी है ऐसा उनका मानना

था। महात्मा गाधी जी ने देश में फैली महामारियों जैसे की मलेरिया, चेचक, हैजा आदि के समय काफी सहायता कार्य किया चम्पारण की गरीबी आपदा व दुदर्शा देखने हेतू वो चम्परण गए उन्होने कहा की में भी तब तक पुरा शरीर नही ढकुंगा जब तक हमारे देश की महिलाए पुरे वस्त्र नही पैहनेगी। गाधी ने गरीबो की दुदर्शा पर रोशनी डालने के लिए हरिजन पत्र निकाला। महात्मा गांधी और सुभाष चन्द्र बोस की आजादी के सदंर्भ में दो अलग अलग भावनाए हैं। 1947 से पहले की कांग्रेस शताब्दी नायक महात्मा गांधी की थी उन्होने मध्य निषेध के खिलाफ आदोलन चलाया उन्होने विदेशी वस्तुओ की होली जलाई व स्वदेशी का प्रचार किया उन्होने अहिंसा का सहारा लेकर आजादी के लिए संघर्ष किया वो हिंसा व हिंसावादियो के खिलाफ थे। युद्ध किसी भी रूप में हो मानव जाति के हित में हो ही नहीं सकता वो सर्वहारा भुमि हीन को नायक के रूप में प्रस्तुत करते थे। उन्होने संस्थान के प्रधानमंत्री राहत कोस में सर्वाधिक धन राशि का योगदान करने के लिए निदेशक महोदय की प्रशंसा भी की।

इस अवसर पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के सहायक महा निदेशक डा. एस भास्कर, (सस्य विज्ञान कृषि वाण्किी, जलवायु परिवर्तन विभाग) श्री राजीव रंजन तथा डा. निदेशक प्रबोध चन्द्र शर्मा तथा संस्थान के अधिकारियों व कर्मचारियो ने पौधारोपण किया। 29 सितंबर को स्वच्छता विषय पर विदयार्थीयों में प्रोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया और विजेताओं ने ईनाम प्राप्त किए। कार्यक्रम में डा. राकेश बनयाल ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा डा. प्रवीन कुमार ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।